लॉज की बैठकों का प्रच्छन्न पक्ष

(The Hidden side of Lodge Meetings)

मूल लेखक
सी. डब्ल्यू. लेडबीटर

अनुवादक
उमाशंकर पाण्डेय

प्रकाशक
इण्डियन बुक शॉप
थिऑसोफिकल सोसायटी
कमच्छा, वाराणसी -221 010

प्रतिया - 500

मूल्य - रु० 8 /-

मुद्रक
आर. एस. प्रिण्टर्स
वाराणसी -221 010

प्राक्कथन

थिऑसोफिकल सोसाइटी के हिन्दी पाठक सदस्यों के लाभ के लिए थिऑसोफिकल सोसाइटी की भारतीय शाखा द्वारा मूल अंग्रेजी की पुस्तकों का समय–समय पर अनुवाद कराकर प्रकाशित किया जाता है। इसी क्रम में सी. डब्ल्यू. लेडबीटर द्वारा अंग्रेजी में लिखित पुस्तिका The Hidden Side of Lodge Meetings, का हिन्दी अनुवाद ''लॉज की बैठकों का प्रच्छन्न पक्ष" शीर्षक से भारतीय शाखा द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

जनवरी, 2020

प्रदीप गोहिल
अध्यक्ष, भारतीय शाखा
थिऑसोफिकल सोसाइटी, वाराणसी

प्रस्तावना

सी. डब्ल्यू. लेडबीटर की अंग्रेजी में लिखी पुस्तिका The Hidden Side of Lodge Meetings का थिऑसोफिकल साहित्य में एक विशेष महत्व है। लॉज की बैठकों में जब किसी थिऑसोफिकल विषय की चर्चा होती है तो उस बैठक में सम्मिलित लोगों के मनस की तरंगें उच्चतर मनस स्तर तक जाती हैं और फैलती हैं। वे न केवल बैठक में सम्मिलित व्यक्तियों के मन को प्रभावित करती हैं बल्कि उच्च मनस स्तर के वृहद् क्षेत्र में सभी संवदेनशील व्यक्तियों पर प्रभाव डालती हैं। इसके कई अन्य उन्नत प्रभाव भी होते हैं। लेडबीटर ने इस पुस्तिका में लॉज की बैठक के ऐसे गुह्य पक्ष को बताया है।

इस पुस्तिका की सामग्री की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इसका अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत है। आशा है थिऑसोफिकल सोसाइटी के हिन्दी – पाठक सदस्य पुस्तिका के इस हिन्दी रूपान्तर से लाभान्वित होंगे।

जनवरी, 2020

उमाशंकर पाण्डेय
अध्यक्ष, उ.प्र. और उत्तराखण्ड फेडरेशन
तथा राष्ट्रीय प्रवक्ता।

लॉज की बैठकों का प्रच्छन्न पक्ष

हम लोग एक थिऑसोफिकल लॉज की एक बैठक के प्रच्छन्न या छिपे हुए पक्ष पर विचार करें; विशेष तौर से सामान्य साप्ताहिक बैठक, जिसमें लॉज में एक निश्चित दिशा में अध्ययन होता है। निःसन्देह मैं लॉज के सदस्यों की बैठक का उल्लेख कर रहा हूं क्योंकि गुह्य प्रभाव जिसका मैं वर्णन करना चाहता हूं, ऐसी बैठकों जिसमें गैर सदस्य व्यक्ति भी सम्मिलित होते हैं, में पूर्णतया असम्भव होता है।

स्वभावतः प्रत्येक लॉज के कार्य का एक सार्वजनिक पक्ष होता है। सामान्य जन के लिए व्याख्यान दिया जाता है और उनको प्रश्न पूछने के लिए अवसर दिया जाता है; यह सब अच्छा और आवश्यक है। किन्तु प्रत्येक लॉज जो अपने नाम को सार्थक करता है, भौतिक स्तर पर किए हुए कार्य की अपेक्षा

कुछ अधिक उच्चतर स्तर पर कार्य करता है, और यह उच्चतर कार्य केवल इसकी मुख्य बैठकों में ही किया जा सकता है।

और भी यह केवल तभी किया जा सकता है यदि ये बैठकें सुचारु रूप से की जाएं और पूर्णतया सामन्जस्यपूर्ण हों। यदि सदस्य किसी ढग से स्वयं अपने बारे में सोचते हैं– यदि उनका व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा या घमण्ड है, जिसके द्वारा वे अपने को लॉज की कार्यवाही में अधिक प्रधानता देना चाहते है; यदि उनकी दूसरी व्यक्तिगत भावना हैं जिससे वे अपमानित महसूस करते हैं या ईर्ष्या या विद्वेष से प्रभावित होते हैं तब किसी लाभदायक गुह्य प्रभाव का उत्पन्न होना सम्भव नहीं होता। किन्तु यदि वे अध्ययन के लिए तय विषय को समझने में गम्भीर रूप से प्रयत्न करते हुए स्वयं को भूल गए हैं, तब बहुत महत्वपूर्ण और लाभदायक परिणाम उत्पन्न होता है जिसके बारे में उनको सामान्यतः कोई अवधारणा नहीं होती है। मैं इसके

कारण की व्याख्या करूंगा।

हम यह मान कर चलेंगे कि बैठकों की एक श्रृंखला है जिसमें किसी एक निश्चित पुस्तक का अध्ययन किया जा रहा है। प्रत्येक सदस्य पहले से यह जानता है कि आने वाली बैठक में पुस्तक का कौन सा अनुच्छेद या पृष्ठ अध्ययन के लिए लिया जाएगा। और यह आशा की जाती है कि वह बैठक में बिना किसी पूर्व तैयारी के नहीं आएगा। वह बच्चों की तरह केवल मुंह खोल कर प्रतीक्षा करते हुए नहीं बैठेगा, यह आशा करते हुए कि कोई उसे भोजन देगा। इसके विपरीत प्रत्येक सदस्य को, विषय जिस पर विचार किया जा रहा है, की समझदार पकड़ होनी चाहिए और उसको अपने हिस्से की जानकारी का भी योगदान करना चाहिए। एक अच्छी योजना वह होती है जिसमें समूह का प्रत्येक सदस्य हमारे कुछ थिऑसोफिकल पुस्तकों को जांचने और समझने के लिए स्वयं को उत्तरदायी बनाए।

एक बैठक में जिस विषय पर विचार होना है उसकी घोषणा पहले की बैठक में हो जानी चाहिए। और प्रत्येक सदस्य उस पुस्तक में संदर्भित सामग्री को ध्यानपूर्वक देखने के लिए अपने को उत्तरदायी बनाएगा जिससे कि जब वह बैठक में आता है तो उस विशेष पुस्तक में जो जानकारी दी गयी है वह उसके पास है। और जब बैठक में उससे कुछ पूछा जाए तो वह अपना योगदान देने के लिए तैयार रहे। इस ढंग से प्रत्येक सदस्य का अपना कार्य करने के लिए होता है और प्रत्येक को सामग्री की पूर्ण और स्पष्ट समझ बनाने में सहायता मिलती है जब सभी उपस्थित सदस्य इस प्रकार अपने विचारों को गम्भीरता से विषय पर स्थिर करते हैं। इसको पूरी तरह समझने के लिए हम एक क्षण के लिए एक विचार का प्रभाव देखें।

प्रत्येक विचार जो पर्याप्त रूप से अपने नाम के योग्य

निश्चित है दो अलग–अलग परिणाम उत्पन्न करता हैः प्रथम, यह स्वयं एक मनस देह का स्पन्दन या कम्पन्न होता है और ऐसा स्पन्दन मनस शरीर के विभिन्न स्तरों पर हो सकता है। प्रत्येक दूसरे स्पन्दनों की तरह इसकी प्रवृत्ति अपने आसपास के पदार्थों में अपनी प्रतिलिपि प्रस्तुत करने की होती है। जैसे एक वीणा के तार जब कम्पित किए जाते हैं तो अपने चारो ओर की हवा में उस कम्पन्न को भेजते हैं जिससे एक श्रव्य ध्वनि पैदा होती है। इसी प्रकार मनुष्य के मनस शरीर के किसी खास घनत्व के पदार्थ में प्रस्थापित विचार का स्पन्दन स्वयं को उस व्यक्ति के चारो ओर स्थित मनस स्तर के उसी घनत्व के पदार्थ में अपने को संचारित करता है।

दूसरा, प्रत्येक विचार मनस स्तर के जीवन्त पदार्थ को अपने चारो तरफ खींचता है और अपने लिए एक वाहन बनाता है जिसको हम विचार–रूप कहते हैं। यदि विचार साधारणतया

एक समझ का अभ्यास है (जैसे कि किसी गणितीय या ज्यामितीय समस्या को हल करने में होता है) तब विचार–रूप मनस स्तर पर ही रहता हैं, किन्तु यदि इसमें जरा भी इच्छा या भावना का रंग होता है या यह किसी तरह व्यक्तिगत स्व से जुड़ा होता है तब यह तुरन्त अपने चारो तरफ एस्ट्रल पदार्थ का आवरण बनाता है और स्वयं को एस्ट्रल (भावना/इच्छा) स्तर पर भी व्यक्त करता है।

अमूर्त की अनुभूति के गहन प्रयास –उदाहरण के लिए जिसको हम चौथा आयाम या तालिका का तालिकत्व कहते हैं, उसको समझने का प्रयास – का अर्थ होता है उच्चतर मनस स्तरों पर एक सक्रियता; जबकि यदि विचार निःस्वार्थ स्नेह से युक्त है, उच्च आकांक्षा या भक्तिपूर्ण है, तब यह भी संभव है कि बुद्धि स्तर का एक कम्पन्न इसमें प्रवेश करे और इसकी शक्ति को सौ गुणा बढ़ा दे। हम इन दो परिणामों पर अलग–अलग

विचार करें और देखें कि उनमें से प्रत्येक के बाद क्या होता है।

कम्पन्न को हम मनस स्तर के प्रत्युत्तर देने योग्य पदार्थ के माध्यम से फैलता हुआ सोच सकते हैं– अर्थात् उसी अंश के घनत्व के पदार्थ के माध्यम से जिसमें यह मूल रूप से उत्पन्न किया गया था। स्वभावतः इस ढंग से विकीर्ण होते हुए यह कई दूसरे लोगों के मनस शरीर के सम्पर्क में आता है और इसकी वृत्ति उन शरीरों में स्वयं की प्रतिलिपि प्रस्तुत करने की होती है। कितनी दूरी तक यह प्रभावी ढंग से विकीर्ण होता है यह आंशिक रूप से कम्पन्न की प्रकृति पर निर्भर करता है और शेष अंश में उस प्रतिरोध पर जो इसको मिलता है। निम्नतर किस्म के ऐस्ट्रल पदार्थ से मिले–जुले कम्पन्न उसी स्तर के कई अन्य कम्पनों द्वारा मोड़ दिए जाते हैं या अभिभूत कर दिए जाते हैं वैसे ही जैसे कि एक बड़े शहर के गर्जन वाले कोलाहल के बीच एक हल्की ध्वनि पूरी तरह डूब जाती है।

औसत मनुष्य का सामान्य स्वकेन्द्रित विचार मनस स्तर के निम्नतम स्तर पर आरम्भ होता है और तुरन्त ही तदनुरूप निम्न ऐस्ट्रल स्तर तक चला जाता है। इसलिए दोनों स्तरों पर इसकी शक्ति अधिक सीमित होती है क्योंकि, चाहे यह कितना भी तेज हो, वहां पर उसी तरह के विचारों का बहुत तेज और अशांत समुद्र होता है जिसमें इस तरह के विचारों के कम्पन्न उठते रहते हैं और वह कम्पन्न शीघ्र ही उनमे घुलमिल जाता है और उस अव्यवस्था में पराभूत हो जाता है।

किन्तु उच्चतर स्तर पर उत्पन्न हुए एक कम्पन्न को अपने कार्य के लिए अधिक साफ क्षेत्र होता है क्योंकि वर्तमान समय में ऐसे कम्पन्न उत्पन्न करने वाले विचारों की संख्या बहुत कम है – वास्तव में इस दृष्टिकोण से थिऑसोफिकल विचार स्वयं अपने में एक अलग वर्ग के होते हैं। सही धार्मिक लोगों का विचार उतना ही उच्च होता है जितने हमारे किन्तु

यह कभी भी इतना सटीक और निश्चित नहीं होता है; बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके विचार उनके व्यवसाय या धन उपार्जन होते हुए भी सटीक होते हैं किन्तु वे उन्नत या परोपकारी नहीं होते हैं। वैज्ञानिक विचार भी कदाचित ही उस वर्ग में आता है जैसा कि एक सही थिऑसोफिक विचार होता है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि हमारे साधकों के पास मनस संसार में स्वयं अपने लिए एक खुला क्षेत्र या मैदान है।

इसका परिणाम यह होता है कि जब एक मनुष्य थिऑसोफिक विषय पर सोचता है उस समय वह अपने चारो तरफ एक बहुत ही शक्तिशाली कम्पन्न भेज रहा होता है क्योंकि वास्तव में इसका कोई प्रतिरोध नहीं होता, जैसे कि एक गहरी शांति के बीच एक ध्वनि या अधिकतम अंधेरी रात में एक चमकदार प्रकाश। यह मनस पदार्थ के एक स्तर, जिसको कदाचित ही प्रयोग किया गया है, में गति पैदा करता है और

इसके द्वारा जो विकीर्ण होते हैं वे औसत मनुष्य के मनस–शरीर के उस बिन्दु पर प्रभाव डालते हैं जहां पर यह बिल्कुल निष्क्रिय है।

यह न केवल विचारक के लिए किन्तु दूसरे जो उसके चारो तरफ हैं उनके लिए भी विचार को एक विशेष महत्व देता है; क्योंकि इसकी वृत्ति विचार करने वाले यन्त्र के बिलकुल नए हिस्से को उपयोग में करने की और जागृत करने की होती है। यह भी समझना चाहिए कि यह आवश्यक नही है कि एक ऐसा कम्पन्न उन लोगों को थिऑसोफिक विचार भेजे जो इसके बारे में अनभिज्ञ हैं; किन्तु उनके मनस शरीर के उच्चतर हिस्से को जागृत करने में यह निःसन्देह उस व्यक्ति के विचार को पूर्ण रूप से ऊपर उठाने और उदार बनाने की वृत्ति करता है, चाहे उस व्यक्ति की आदत किसी भी दिशा में विचार व्यक्त करने की हो। और इस ढंग से यह अमूल्य लाभ उत्पन्न करता है।

यदि एक अकेले व्यक्ति का विचार ऐसे परिणाम उत्पन्न करता है, तो यह आसानी से समझा जा सकता है कि बीस या तीस लोगों के एक ही विषय पर केन्द्रित विचार अत्यन्त अधिक और महानतर प्रयास प्राप्त करेंगे। कई लोगों के संयुक्त विचार की शक्ति उस समूह के व्यक्तियों के अलग–अलग विचारों के योग से कहीं और अधिक होती है; और यह उनके अधिक उत्पादन द्वारा परिलक्षित होगा। इसलिए यह देखा जाएगा कि केवल इस दृष्टिकोण से भी यह किसी नगर या समुदाय के लिए एक बहुत अच्छी बात है कि उनके बीच में एक थिऑसोफिकल लॉज की मीटिंग नियमित रूप से हो क्योंकि इसकी कार्यवाही जब उचित ढंग से की जाए, तो यह उस आसपास की आबादी पर एक उन्नत और उदात्त प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकता। निःसंदेह कई ऐसे लोग होंगे जिनके मन अभी भी उस उच्चतर स्तर पर जागृत

नहीं किए जा सकते किन्तु उनके लिए भी इस तरह के अधिक उन्नत विचार की तरंगों के लगातार थाप से उनके जागृत होने का समय अधिक निकट आएगा ही।

हमें एक निश्चित विचार–रूप के बनने द्वारा उत्पन्न प्रभाव के बारे में भी नहीं भूलना चाहिए। ये भी क्रिया के केन्द्र से विकीर्ण होंगे किन्तु ये केवल उन्हीं मन को प्रभावित कर सकेंगे जो पहले से इसप्रकार के विचार के अनुकूल हैं। आजकल के दिनों में ऐसे बहुत मन हैं और हमारे कई ऐसे सदस्य हैं जो इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि उनके द्वारा किसी विषय जैसे पुनर्जन्म के प्रश्न पर विचार विमर्श हुआ तो आसपास के किसी व्यक्ति द्वारा इस विषय पर जानकारी मांगी गयी जबकि पहले उसकी इसमें बिलकुल रुचि नहीं थी। यह समझना चाहिए कि विचार–रूप उस विचार की ठीक प्रकृति को उन लोगों को पहुंचाने में सक्षम होते हैं जो कुछ हद तक इसको ग्रहण करने

के लिए तैयार होते हैं, जबकि विचार कम्पन्न यद्यपि अधिक चौड़े वृत्त तक पहुंचता है किन्तु अपने कार्य में यह कम निश्चित होता है।

तब यह देखा जा सकता है कि हमारे सदस्यों द्वारा सामान्य अध्ययन की प्रक्रिया में मनस स्तर पर गैर– इरादतन एक अहम प्रभाव पैदा होता है– यह प्रभाव प्रचार के लिए इरादतन प्रयास की अपेक्षा बहुत अधिक होता है। किन्तु यही सबकुछ नहीं है क्योंकि सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा अभी भी आना है। सोसाइटी का प्रत्येक लॉज प्रज्ञा के महान गुरुओं की रुचि का केन्द्र होता है और जब यह सही ढंग से काम करता है तब उन महान गुरुओं के तथा उनके शिष्यों के विचार प्रायः लाज की ओर मुड़ते हैं। इस प्रकार इस ढंग से हमारे बल से एक बहुत अधिक बल उस समूह से प्रायः उत्पन्न होता है और एक अपरिमेय मूल्य के प्रभाव को वहां केन्द्रित किया जा सकता है

जो हमारे संज्ञान मे किसी अन्य तरीके से नहीं हो सकता।

वास्तव में हम जो काम कर सकते हैं यह उसकी सीमा प्रतीत होती है। फिर भी कुछ इससे भी बड़ी चीज है। गुह्य विद्या के सभी साधक यह जानते हैं कि ईश्वर का प्रकाश व जीवन पूरे प्रणाली में अधिकता से प्रवाहित होता है– प्रत्येक स्तर पर उनकी विशेष शक्ति जो हमारे लिए उचित है, उड़ेली जाती है। स्वभावतः, स्तर जितना उच्चतर होगा उतना ही उनके ऐश्वर्य का आवरण कम होगा क्योंकि जैसे हम ऊपर चढ़ते हैं वैसे हम उसके स्रोत के अधिक निकट खिंचते हैं। सामान्यतया प्रत्येक स्तर पर उड़ेला गया बल उसी तक सीमित होता है, किन्तु यह नीचे के स्तर पर उतर सकता है या उसको प्रकाशित कर सकता है यदि एक विशेष नलिका तैयार कर ली जाए।

जब भी कोई विचार या भावना पूर्णतया निःस्वार्थ पक्ष

के हों तब एक ऐसी नलिका सर्वदा बन जाती है। एक स्वार्थपूर्ण भावना एक बन्द वक्र में घूमती है और इसलिए अपने ही स्तर पर इसका प्रत्युत्तर होता है; एक सर्वथा निःस्वार्थ गति एक ऐसी शक्ति का प्रस्फुटन होती है जो वापस नहीं आती है, किन्तु अपने ऊपर की ओर गति में एक नलिका प्रदान करती है जिसमें से उसके ऊपर के स्तर से दैवीय शक्ति नीचे ढ़ाली जाती है। प्रार्थना के एक प्रत्युत्तर के पुराने विचार के पीछे यही वास्तविकता है।

एक मनुष्य जो उच्चतर चीजों के गम्भीर अध्ययन में व्यस्त रहता है वह उस समय के लिए बिलकुल अपने से ऊपर उठा होता है और मनस स्तर पर एक शक्तिशाली विचाररूप उत्पन्न करता है। इस विचार–रूप का उपयोग इसके ऊपर के स्तर पर मडराती हुई शक्ति द्वारा एक नलिका के रूप में तुरन्त ही किया जाता है। जब कई लोग इस प्रकृति के विचार में जुड़े

होते हैं तो उसकी नलिका अपनी क्षमता में, उनके अलग–अलग नलिकाओं के योग की तुलना मे, बहुत बड़ी बनती है। इसलिए एक ऐसा समूह उस समाज के लिए जिसमें वह काम करता है, अमूल्य वरदान होता है, क्योंकि इसमें से होकर (यहां तक कि अध्ययन के लिए अति सामान्य बैठकों मे जब यह ऐसे विषयों जैसे, परिक्रमा और प्रजाति, पितृ या गृहीय श्रंखला पर विचार कर रहा है) निम्न मनस स्तर में उस बल का ऐसा प्रवाह आ सकता है जो सामान्यतया उच्चतर मनस स्तर की विशेषता होती है।

यदि विचार–रूप अपना ध्यान थिऑसोफिकल शिक्षाओं के उच्चतर पक्ष की ओर मोड़ता है और नैतिकता तथा जीवात्मा के विकास के प्रश्नों का अध्ययन करता है जिसको हम ''मार्ग प्रकाशिनी'', ''नीरवनाद'' और हमारे अन्य साधना वाले पुस्तकों में पाते हैं, तो यह और अधिक ऊंचे विचार की

नलिका बना सकता है, जिसके द्वारा बुद्धि स्तर का बल स्वयं मनसस्तर पर उतरता है और इसप्रकार विकीर्ण और प्रभाव कई ऐसे जीवात्माओं के लिए फैलता है जो उसके लिए न्यूनतम भी खुले हुए नहीं होंगे अर्थात ग्रहणशील नहीं होंगे यदि विचाररूप अपने मूल स्तर पर ही रह जाता।

यह थिऑसोफिकल सोसाइटी के लॉज का एक वास्तविक और महानतम कार्य होता है – दिव्य जीवन को वितरित करने की एक नलिका प्रदान करना, और इसप्रकार हमारे पास एक उदाहरण है यह दिखाने के लिए कि दृश्य की अपेक्षा अदृश्य कितना अधिक महान है। धुंधली भौतिक आंखों के लिए वह सभी जो दृश्य है, केवल एक विनम्रसाधकों का एक छोटा समूह है जो साप्ताहिक बैठकों में कुछ सीखने के लिए तथा अपने साथियों के लिए उपयोगी बनने के लिए गम्भीर प्रयत्न कर रहा है। किन्तु उनके लिए जो संसार का अधिक

हिस्सा देख सकते हैं इस छोटी जड़ से एक ऐश्वर्यशाली पुष्प उत्पन्न होता है क्योंकि उस प्रतीयमान महत्वहीन केन्द्र से कम से कम चार शक्तिशाली प्रभाव की धाराएं – विचार कम्पन्नों की धाराएं, विचार–रूपों के समूह, प्रज्ञा के गुरुओं का चुम्बकत्व और दिव्य ऊर्जा का शक्तिशाली प्रवाह–विकीर्ण होती हैं।

यहां भी जीवन के अदृश्य पक्ष के ज्ञान के व्यावहारिक महत्व का एक उदाहरण है। क्योंकि ऐसे ज्ञान की कमी से कई सदस्य अपने काम करने में ढीले पड़ जाते हैं। लॉज की बैठकों में अपनी उपस्थिति के लिए लापरवाह होते हैं और इस तरह दिव्य जीवन की एक नलिका बनने की विशेष सुविधा से वंचित हो जाते हैं। मैंने वास्तव में उन सदस्यों, जो अपनी उपस्थिति में अनियमित थे, से सुना है कि उन्होंने सोच लिया कि बैठक नीरस है और उनमें से उनको कोई अधिक चीज नहीं मिली।

ऐसे लोगों को इस प्राथमिक तथ्य की समझ नहीं है कि वे कुछ प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि कुछ देने के लिए जुड़ते हैं, किसी रुचिकर चीज और मनोरंजन के लिए नहीं, किन्तु मानव समाज की भलाई के लिए महान कार्य में अपना भाग लेने के लिए।

प्रत्येक वस्तु का एक अदृश्य पक्ष होता है और एक गुह्य विज्ञानी का जीवन जीने के लिए प्रकृति के उच्चतर आंतरिक पक्ष का अध्ययन करना होता है और तब समझदारी से स्वयं को इसके अनुकूल करना पड़ता है। गुह्य विज्ञानी प्रत्येक विषय जो उसके सामने होता है उसको समग्रता से देखता है न कि केवल इसके निम्नतम और न्यूनतम महत्व के हिस्से को, और तब अपने कार्य को उसके अनुसार व्यवस्थित करता है जैसा वह देखता है जैसा उसका सामान्य अनुभव बताता है, और उस प्रेम के नियम के अनुसार जो विश्व का

मार्गदर्शन करता है। इसलिए वे जो गुह्य विज्ञान का अध्ययन और अभ्यास करते हैं उनको स्वयं अपने अन्दर तीन अमूल्य सम्पत्तियां विकसित करना चाहिए– ज्ञान, सामान्य बोध और प्रेम।

थिऑसोफी को केवल एक नैतिक सत्यों के संग्रह, एक सैद्धांतिक समूह के सार के रूप में एक तात्विक पुलिंदा का ही प्रतिनिधित्व नहीं करना चाहिए। थिऑसोफी को व्यावहारिक बनना ही चाहिए और इसलिए व्यर्थ की चर्चा से निर्विघ्न होना चाहिए। इसको अपने सार – आपसी सहनशीलता, उदारता और प्रेम–से पूर्णतया ओतप्रोत सर्वव्याप्त जीवन की संहिता में मूर्त अभिव्यक्ति प्राप्त करना चाहिए।